शब्द–ब्रह्म
E ISSN 2320 – 0871
भारतीय भाषाओं की अंतर्राष्ट्रीय मासिक शोध पत्रिका
17 जुलाई 2017
पीअर रीव्यूड रेफ्रीड रिसर्च जर्नल

मन्नू भंडारी की कहानियों के स्त्री पात्र

डॉ. जगदीश चौहान (शोधार्थी)
डॉ.श्रीमती मंजुला जोशी (विभागाध्यक्ष हिन्दी)
शा. शहीद भीमानायक स्नातकोत्तर महाविद्यालय, बड़वानी
देवी अहिल्या विश्वविद्यालय
इंदौर, मध्यप्रदेश, भारत

शोध संक्षेप

कहानी गद्य की वह विधा है, जिसमें कहानीकार अपने विचारों को एक विशिष्ट भाषा शैली में अभिव्यक्ति प्रदान करता है। चूंकि साहित्य समाज के यथार्थ को व्यक्त करने की सामर्थ्य रखता है, इसलिए वर्तमान में घटने वाली घटनाएँ उसमें निश्चित रूप से प्रतिबिंबित होती है। साहित्य के पात्र समाज में क्रियाशील दिखाई देते हैं। साहित्यकार इन्हीं पात्रों को अपने साहित्य के ताने-बाने में सँजोकर पाठकों के समक्ष प्रस्तुत कर देते हैं। उस साहित्य को पढ़कर पाठक आश्चर्य चकित हो जाता है कि यह सब तो हमारे आस-पास ही घटित हो रहा है। मन्नू भंडारी का लेखन इसी प्रकार का है। उनके पात्र किसी दूसरी दुनिया के नहीं वरन इसी लोक के, हमारे आस-पास के ही हैं। उनमें भी कहानियों में स्त्री पात्रों का वैविध्य देखते ही बनता है। प्रस्तुत शोध पत्र में इसी पर विचार किया गया है।

भूमिका

कहानी या साहित्य की किसी भी विधा को जीवंत बनाने के लिये उस कहानीकार या साहित्यकार का मन-मस्तिष्क के साथ-साथ व्यक्तित्व भी उदात्त व प्रभावी होना चाहिए। वह अपने व्यक्तित्व की प्रभावशीलता से अपनी लेखन शैली व विचारार्थ व्यक्ति के चातुर्य से अपनी रचना को प्रभावी ढंग से साहित्य में प्रस्तुत कर सकता है। मन्नू भंडारी ने अपनी जीवन शैली जिस सादगी से बिताई है, उतनी सादगी उनकी कहानियों में भी मिलती है। जिस यथार्थ को उन्होंने भोगा है, वही उनके लेखन में भी अभिव्यक्ति पाता रहा है। उनके सादगीपूर्ण जीवन के संदर्भ में श्री गिरिराज किशोर ने अपने एक लेख में लिखा है, "मन्नूजी की पहचान उस बिंदी से शुरू हुई थी और आज रचनाओं तक पहुँच गई है। ... मन्नूजी को पहली बार देखकर यह प्रश्न जरूर मन में आया कि क्या ये ही वो हैं, जो कहानियाँ लिखती है ? महिला कहानी लेखिकाओं को देखने और इन्हें एक विशिष्ट रूप में स्वीकार करने की आदत के फलस्वरूप मन्नूजी कहानी लेखिका उतनी नजर नहीं आती, जितनी घरेलू स्त्री।"1

मन्नूजी मूलतः शिक्षकीय पेशे से जुड़ी रही हैं, इसलिये साहित्य पढ़ने व लिखने की प्रवृत्ति उनमें स्वाभाविक रही है। इस संबंध में उन्होंने अपनी स्व-संपादित 'अपने से परे' किताब में साहित्यकार के लिये कर्तव्य निर्धारित करते हुए लिखा है, "एक अच्छा कहानी लेखक बनने से पहले अनिवार्य है, एक अच्छा कहानी पाठक बनना।"2

उनकी इस बात की प्रामाणिकता हेतु कि वे अपने इस वचन या कथन का पालन करती हैं या नहीं, डॉ. श्रीमती अनिता राजूरकर का यह कथन

शब्द–ब्रह्म
E ISSN 2320 – 0871
भारतीय भाषाओं की अंतर्राष्ट्रीय मासिक शोध पत्रिका
17 जुलाई 2017
पीअर रीव्यूड रेफ्रीड रिसर्च जर्नल

प्रमाण है, "उनके कमरे की लायब्रेरी में प्रेमचंद, यशपाल से लेकर अभिमन्यु अनत तक कि समस्त पुस्तकें उपलब्ध हैं। वहाँ जयशंकर प्रसाद, चन्द्रकांत बांदिवदेकर, रामनगरकर, ममता कालिया, मीनाक्षी पुरी, शीला रोहेकर, मृदुला गर्ग, दिनेश कामू आदि सभी नये-पुराने चर्चित-अचर्चित साहित्यकारों की पुस्तकें देखी जा सकती हैं। दान क्विक्जोट और भारतीय संस्कृति जैसी पुस्तकें भी वहाँ मौजूद थीं। मन्नूजी ने शरतचन्द्र, प्रेमचंद, यशपाल, अज्ञेय आदि का संपूर्ण साहित्य पढा है और उनसे प्रभावित भी हुई है।"3 जो साहित्यकार इतने साहित्यकारों के साहित्य को सतत् अध्ययन करता हो, उसके साहित्य से उसके गंभीर चिन्तन से समाज का कोई पक्ष अछूता रह ही नहीं सकता। मन्नूजी ने विशेषकर नारी पात्रों को लेकर उनके अन्तर्मन के अनछुए पहलुओं को स्पर्श किया। उन्हें गंभीरता से विचार कर समाज के सुधी पाठकों के समक्ष प्रस्तुत किया।

कहानियों में स्त्री पात्र

नारी के विभिन्न रूपों व नातों को समाज के समक्ष रखकर उन्हें चिंतन के लिये विवश किया है। चाहे फिर वह बेटी हो या बहू, सास हो या माँ, पत्नी हो या प्रेयसी या केाई भी रिश्ता, नारी पात्र को पूरी शिद्दत के साथ रखा है। माँ के हृदय की अतल गहराई में छिपे वात्सल्य को जिस अनूठे ढंग से मन्नूजी ने प्रस्तुत किया है, वह निश्चित रूप से श्लाघनीय है। माँ को जब अपने पुत्र के आने की सूचना भर प्राप्त होती है, तो उसकी मानसिक व शारीरिक दोनों ही स्थितियां बड़ी विचित्र हो जाती है।

'मजबूरी' कहानी की माँ अपने पुत्र, बहू व पोते के आने के समाचार मात्र से अपने शारीरिक कष्ट को भी भूल जाती है - "घुटने का दर्द मन के उत्साह में खो गया और बेटे-पोते से मिलने की उमंग में मौसम की ठंडक भी जैसे जाती रही।"4

माँ के वात्सल्य की ममता किसी से भी नहीं की जा सकती। 'नशा' कहानी की आनंदी को जब चिट्ठी के माध्यम से यह पता चलता है कि उसे उसका पुत्र लेने आ रहा है, तो उसकी जो दशा होती है, उसका चित्रण मन्नूजी ने बड़ी गहराई से किया है - "कल किशनू आ रहा है, सचमुच ही किशनू आ रहा है। और जैसे इतनी देर बाद उसे पहली बार बोध हुआ कि उसके जीवन में क्या कुछ घट गया। बारह साल बाद उसका बेटा आ रहा है- एकाएक चबूतरे पर बैठकर ही आनंदी फूट -फूटकर रो पड़ी। ऊपर से सदा ही शांत रहने वाली पर्वत के भीतर का ज्वालामुखी जब फूटता है, तो कोई भी शक्ति उस आवेग को रोक नहीं पाती ।"5

माँ की भाँति बहन भी त्याग व सहनशीलता की प्रतिमूर्ति होती है। बहन के त्याग व सहनशीलता की एक सीमा है। जब उसकी सहनशीलता की सीमा से बाहर त्याग की बात आती है, तो फिर बहन उसे सहन नहीं कर पाती। 'घुटन' कहानी की मोना अपने छोटे भाई-बहनों व माँ के वृद्धावस्था के सुखमय जीवन के लिये तथा माँ की रूग्णावस्था को देखते हुए अरूण से प्रेम करते हुए भी विवाह नहीं करती, क्योंकि उसके विवाह कर लेने पर परिवार में जिम्मेदारी उठाने वाला कोई नहीं था। साथ ही उसकी माँ भी उसके विवाह करने के पक्ष में नहीं थी - "पर मोना की माँ नहीं चाहती कि मोना उससे (अरूण) ब्याह करे। मोना ब्याह कर लेगी, तो उसके छोटे भाई-बहनों को कौन पालेगा, बूढ़ी की तीस दिन में से उनतीस दिन रहने वाली बीमारी का खर्चा कहाँ से आयेगा। ... सौ-सौ बार हार चुका हूँ। वह रात-रात भर रोती है, दिन दिन घुलती और घुटती

रही है, पर इसके आगे कुछ नहीं जब अरूण आता है, तो वीराने में हरियाली अवश्य छा जाती है, पर बड़ी क्षणिक होती है वह हरियाली, वह तरावट वह नमी इसलिये जीवन उसका सूखा का सूखा ही रह जाता है ।"6

घर की समस्त जिम्मेदारियाँ पिता के पश्चात् पुत्र ही संभालते हैं, लेकिन मन्नूजी ने समाज के इस सत्य को अपनी कहानियों 'एखाने आकाश नाइं.., आते-जाते यायावर, एक कमजोर लड़की की कहानी के माध्यम से बताया है कि बेटियाँ तो पिता के जीवित रहते ही घर की सभी जिम्मेदारियों का निर्वहन करती हैं। परिवार के प्रति अपने कर्तव्य के निर्वहन के बाद जब वह अपने विवाह के संबंध में सोचती है, तो घर वाले उससे नाराज हो जाते हैं। 'एखाने आकाश नाइं...., की सुषमा जब अपने विवाह की तारीख स्वयं तय कर लेती है, तो घर में कोहराम मच जाता है, तब सुषमा कहती है "पिछले तीन साल से मैं केवल घर वालों के लिये मर-खप रही हूँ। नौकरी के साथ दो-दो ट्यूशन करके मैंने घर का सारा खर्च चलाया। अब पिंकी ने बी.ए. पास कर लिया, तो अपनी बात पर सोचना शुरू किया। पर इन लोगों से इतना भी नही होता कि मेरी हँसी खुशी में साथ दें।"7

नारी का सबसे कठिन कर्तव्य होता है, बहू के रूप में। हर सास चाहती है कि उसे अपने आदेशों का पालन करने वाली बहू मिले। उसकी बहू घर-परिवार व समाज की मर्यादा का ध्यान रखें।, 'नशा कहानी की आनंदी बहुत वर्षों तक पति की मार व अत्याचार सहती रही, लेकिन जब उसे बेटे व बहू की स्नेहभरी सेवा मिलती है, तो उसका मन प्रसन्नता से गदगद हो जाता है। "देवी-देवता जैसे हैं, उसके बेटे-बहू कितना ख्याल रखते हैं उसका। जाने कौन-सा पुण्य किया था उसने, जो उसका बुढापा सुधर गया। एक ठंडी साँस उसके कलेजे से निकल गई, संतोष की या विषाद की, वह स्वयं नहीं समझ पायी।"8

मर्यादा में बँधकर संस्कारों को लेकर आने वाली बहू यदि शिक्षित भी हो, तो समाज में घर परिवार में निश्चित ही उसे सम्मान प्राप्त होता है। वैसे भी संस्कारी, व्यवहार-कुशल व विनम्र रहने वाली बहू सभी को प्राप्त नहीं होती।

एखाने आकाश नाइं... कहानी की नायिका लेखा एक आदर्शवादी व समन्वयवादी विचारधारा की बहू है, इसीलिए वह विचार करती है कि - "वह गौरा (ननद) से बात करेगी। रमेश और सुरेश (देवर) को जैसे भी होगा, अपने पास बिठाएगी। वह इस परिवार के लोगों के साथ घुलेगी, मिलेगी। आखिर वह भी इस परिवार की एक सदस्या है।"9

मन्नूजी ने नारी के पत्नी रूप को भी अपनी विभिन्न कहानियों में परिस्थितियों के अनुरूप परिवर्तित रूप में प्रस्तुत किया है। वह परिवार के आधार की धुरी होती है। पत्नी अपने पति और परिवार को विषम परिस्थितियों में संबल, साहस प्रदान करती है, जब उसे ही अपने पति से उपेक्षा व धोखा मिले तो उसका मन टूट जाता है। उसका घर संसार व पति के प्रति अपना मोह समाप्त हो जाता है। 'बंद दराजों के साथ' कहानी की मंजरी इसी कारण अपने पति को त्याग देती है। पत्नी को जब अपने पति से अपनत्व प्राप्त नहीं होता, जब वह धन कमाने में ही अपना सारा समय लगा देता है, तो पत्नी का अन्तर्मन विक्षिप्त हो जाता है। 'कील और कसक' कहानी की रानी अपने पति कैलाश से इसीलिये रूष्ट है। पश्चिमी संस्कृति ने भारतीय सभ्यता संस्कृति को किस स्तर तक गिराया है, इसका उदाहरण हमें मन्नू जी की कहानी 'ऊँचाई' में मिलता है।

शिशिर की पत्नी शिवानी विवाह के पश्चात् भी अपने प्रेमी से शारीरिक संबंध रखते हुए भी स्वयं को पतिव्रता मानती है और अपने पति से कहती है कि - "मेरे जीवन में तुम्हारा जो स्थान है, उसे कोई नहीं ले सकता, लेना तो दूर, उस तक कोई पहुँच भी नहीं सकता। किसी के कितनी ही निकट चली जाऊँ, चाहे शारीरिक संबंध भी स्थापित कर लूं, पर मन की जिस ऊँचाई पर तुम्हें बिठा रखा है, वहाँ कोई नहीं आ सकता, किसी से उसकी तुलना करने में भी तुम्हारा अपमान होता है।"10 नारी प्रेयसी के रूप में भी अपने प्रिय के लिये समाज की मर्यादाओं की परवाह कभी नहीं करती। उस स्थिति में उसे अपना प्रिय और अपना प्रेम सबसे ताकतवर लगता है। वह अपने प्रेम के बल पर, अपने साहस के बल पर सारी दुनिया से लड़ने को भी तत्पर हो जाती है। मन्नूजी ने 'यही सच है, 'एक बार और', 'गीत का चुंबन', 'कील और कसक' में नारी के इस रूप का चित्रण किया है। कहीं वह त्रिकोण प्रेम के जाल में फँसती है, तो कभी प्रेम की एकाग्रता के कारण अपने पूर्व प्रेम को विस्मृत नहीं कर पाती। 'यही सच है' की दीपा त्रिकोण प्रेम के कारण ही संजय की ओर, तो कभी निशीथ की ओर आकर्षित होती है । वहीं 'एक बार और' कहानी की बिन्नी कुञ्ज से प्रेम करती है। जब कुञ्ज किसी ओर से प्रेम करने लगता है, तो वह भी नंदन से प्रेम करने लगती है, लेकिन फिर भी कुञ्ज के प्रेम को अपने मन से विस्मृत नही कर पाती।

"आज सबेरे से उसने कितनी बार कुञ्ज का पत्र पढ़ा है।"11

तो कभी वह पत्नी बनने के बाद पति से प्रेम प्राप्त न होने पर प्रेयसी की भूमिका में आ जाती है। 'कील और कसक' कहानी की नायिका रानी विवाह के प्रथम दिन ही जब पति द्वारा उपेक्षित कर दी जाती है, तो वह शेखर के प्रति आकर्षित हो जाती है।"16

उक्त पात्रो के साथ नारी मामी, नानी, बुआ, भाभी, मौसी, देवरानी, जेठानी और अन्य अनेक रूपों में समाज में अपनी भूमिका निभाती है। हर रिश्ते नाते को वह बखूबी निभाने का प्रयास करती है। 'अकेली' कहानी की बुआ पूरे गाँव की बुआ के रूप में जानी जाती है। उनका मानना केवल यही था कि कोई प्रेम से बुलाये तो तुलसीदास की इस बात का समर्थन करती है कि-

"आवत ही हरषे नही, नैनन नहीं सनेह।
तुलसी तहँ ना जाइये, कंचन बरसत मेह।।"

जो उनसे प्रेम संबंध रखते हैं, वे उनके घर बिना बुलाये भी चली जाती है। उस संबंध में वे राधा भाभी से कहती हैं कि - "मैं तो अपनेपन की बात जानती हूँ। कोई प्रेम न रखे, तो दस बुलावे पर नहीं जाऊँ और प्रेम रखे, तो बिना बुलाए भी सिर के बल जाऊँ।"12

संतान को माँ की भाँति वात्सल्य देने वाली मौसी होती है, इसीलिए उसे 'मा-सी' अर्थात् माँ जैसी कहा जाता है। मन्नूजी ने इस नारी पात्र का चित्रण भी अपनी कहानी 'गीत का चुंबन में किया है। कनिका की माँ न होने पर उसे उसकी मौसी ही पालती है तथा अपनी संतान की भाँति वात्सल्य स्नेह प्रदान करती है - "उस दिन वह इतना जान पाया कि बचपन में ही माँ के मर जाने से मौसी ने ही कनिका को पाला है, वे अपने बच्चों से अधिक प्यार करती हैं।"13

इसी तरह मन्नूजी ने दादी के हृदय को भी माँ जैसा वात्सल्य स्नेह से युक्त बताया है। दादा-दादी का दुलार भी माता-पिता के स्नेह से कम नही होता। पोते पोतियों को भी अपने दादा-दादी

से अधिक लगाव होता है। 'मजबूरी' कहानी में मन्नूजी ने दादी के स्नेह की व्यापकता व गंभीरता को अभिव्यक्त किया है - "बीस दिन के बाद जब बहू ने अपनी माँ के घर प्रयाण किया, बेटू ने न जिद की, न वह रोया ही । माँ के कड़े नियंत्रण के बाद दादी के असीम दुलार में रहना जहाँ कोई बंधन नहीं, अंकुश नहीं, बेटू को बड़ा अच्छा लगा।"14

निष्कर्ष

इस प्रकार मन्नूजी ने अपनी विभिन्न कहानियों में विभिन्न नारी पात्रों का चारित्रिक उद्‌घाटन किया है। ये पात्र आज भी हमें समाज के किसी-न-किसी वर्ग, संप्रदाय और अमीर-गरीब में देखने को मिल जाते हैं। साहित्यकार युग-दृष्टा व युग-सृष्टा होता है । उसके चिंतन की गंभीरता इतनी होती है कि समाज में घटने वाली घटनाएँ उनकी कालम से कागज के कोरे पन्नों में उकेर दी जाती है। वे पात्र उनका चरित्र चित्रण स्वभाव विचार व चिंतन के साथ मन में उठने वाले भावों की अभिव्यक्ति भी हमें साहित्यकार के साहित्य में पढ़ने को मिल जाती है।

संदर्भ ग्रन्थ

1. मनोरमा, गिरिराज किशोर, अक्टूबर 1977, पृष्ठ 6
2 देशबंधु - दैनिक पत्रिका, 28 जनवरी, 1977
3 कथाकार मन्नू भंडारी, अनिता राजूरकर, पृष्ठ 8
4 मेरी प्रिय कहानियाँ - मजबूरी, मन्नू भंडारी, पृष्ठ 20
5 यही सच है - नशा, मन्नू भंडारी, पृष्ठ 89-90
6 तीन निगाहों की एक तस्वीर - घुटन, मन्नू भंडारी, पृष्ठ 63-64
7 मेरी प्रिय कहानियाँ - एखाने आकाश नाइं, मन्नू भंडारी, पृष्ठ 49
8 यही सच है -नशा, मन्नू भंडारी, पृष्ठ 97-98
9 मेरी प्रिय कहानियाँ -एखाने आकाश नाइं, मन्नू भंडारी, पृष्ठ 65
10 एक प्लेट सैलाब - ऊँचाई, मन्नू भंडारी, पृष्ठ 134
11 एक प्लेट सैलाब - एक बार और, मन्नू भंडारी, पृष्ठ 70
12 मेरी प्रिय कहानियाँ -अकेली, मन्नू भंडारी, पृष्ठ 13
13 मैं हार गई - गीत का चुम्बन, मन्नू भंडारी, पृष्ठ 25
14 मेरी प्रिय कहानियाँ - मजबूरी, मन्नू भंडारी, पृष्ठ 23